Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 9, October-2018, ISSN 2230-7540

जन-संचार माध्यम

Dr. Lavane Vijay Bhaskar*

Research Director, Mahatma Gandhi College, Ahmadpur, Tehshil-Ahmadpur, District-Latur

सारांश - लोकसंपर्क का अर्थ बड़ा ही व्यापक और प्रभावकारी है। लोकतंत्र के आधार पर स्थापित लोकसत्ता के परिचालन के लिए ही नहीं बल्कि राजतंत्र और अधिनायकतंत्र के सफल संचालन के लिए भी लोकसंपर्क आवश्यक माना जाता है। कृषि, उद्योग, व्यापार, जनसेवा और लोकरुचि के विस्तार तथा परिष्कार के लिए भी लोकसंपर्क की आवश्यकता है। लोकसंपर्क का शाब्दिक अर्थ है 'जनसधारण से अधिकाधिक निकट संबंध। प्राचीन काल में लोकमत को जानने अथवा लोकरुचि को सँवारने के लिए जिन साधनों का प्रयोग किया जाता था वे आज के वैज्ञानिक युग में अधिक उपयोगी नहीं रह गए हैं। एक युग था जब राजा लोकरुचि को जानने के लिए गुप्तचर व्यवस्था पर पूर्णतः आश्रित रहता था तथा अपने निदेशों, मंतव्यों और विचारों को वह शिलाखंडों, प्रस्तरमूर्तियों, ताम्रपत्रों आदि पर अंकित कराकर प्रसारित किया करता था। भोजपत्रों पर अंकित आदेश जनसाधारण के मध्य प्रसारित कराए जाते थे। राज्यादेशों की मुनादी कराई जाती थी। धर्मग्रंथों और उपदेशों के द्वारा जनरुचि का परिष्कार किया जाता था। आज भी विक्रमादित्य, अशोक, हर्षवर्धन आदि राजाओं के समय के जो शिलालेख मिलते हैं उनसे पता चलता है कि प्राचीन काल में लोकसंपर्क का मार्ग कितना जटिल और दुरूह था। धीरे धीरे आधुनिक विज्ञान में विकास होने से साधनों का भी विकास होता गया और अब ऐसा समय आ गया है जब लोकसंपर्क के लिए समाचारपत्र, मुद्रित ग्रंथ, लघु पुस्तक-पुस्तिकाएँ, प्रसारण यंत्र (रेडियो, टेलीविजन), चलचित्र, ध्वनिविस्तारक यंत्र आदि अनेक साधन उपलब्ध हैं।

----------X----------

मानव हमेशा सूचना या जानकारी प्राप्त करने हेतु सदैव किसी-न-किसी माध्यम का सहारा लेता है। दो या उससे अधिक लोगों में जब सूचनाओं का आदान प्रदान होता है, तब उस सूचना को मुद्रित करके बडे जनसमूह तक पहुचाया जाता है तंब उसे जनसंचार कहा जाता है। समाज के हर तरह के प्रश्न को जनसंचार द्वारा उजागर किया जाता है। ''जन-जन को शिक्षत करने मे जनसंचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। 1) जनसंचार में प्रचलित संचार शब्द संस्कृत के 'चर' धातु से बना है। चर से 'चलना' याने सूचनाओं विचारों को आगे लाना। इस प्रक्रिया में अदान प्रदान होता है और उसे भी जनसंचार कहा जाता है। जनसंचार के दो माध्यम है, परंपगत माध्यम और आधुनिक माध्यम।

परंपरागत माध्यम:-

मनुष्य पुराने जमाने से अपने विचार भावनाये, संदेश को व्यक्त करने के लिए परंपरासे चले आये जनसंचार माध्यमों का प्रयोग करता रहा है, परंपरागत माध्यमो में कालानुरुप बदलावा दिखाई देते आये है। पर वह परंपरागत जनसंचार माध्यम कुछ हदतक आज भी प्रभावी दिखाई देते है।

1) **धर्मिक संचार माध्यम:-** अलग-अलग धर्मगुरु धर्म प्रचार-प्रसार हेतु देश तथा विदेश भ्रमण करते थे तब उनके द्वारा जनसंचार कार्य होता था। वह जब भ्रमण करते थे तवह जो प्रवचन देते थे, चित्र दिखाते थे, वार्ता सूनाते थे, संगीत या कला का सहारा लेते थे उससे भी जनसंचार का कार्य होता था।

2) **लोकगीत:-** पूराने जमाने से लेकर वर्तमान समय तक सामान्य मानव के भाव विचारों को अभिव्यक्त करने की कला लोकगीत है। विविधता में एकता इस देश की विशेषता रही है। इस देश में त्योंहारों का बडा महत्व होता है। हर त्योंहारो में गीत गाये जाते है जैसे- फसल कटाई बच्चे के जन्म विवाह मुण्डन आदि समय गीत गाये जाते है। भारत की ग्रामीण जनता इन गीतों को आज भी बडे आनंद के साथ गाती है। इसी कारण ''लोकगीत ग्रामीण जनसंचार

www.ignited.in

के प्रभावी माध्यम है जो आज भी प्रचलीत दिखाई देते है 2) जीससे आज भी जनसंचार का कार्य हो रहा है।

3) **लोककथा:-** भारत में लोककथाये पूराने जमाने से मौखिक तथा लिखित रुप में एक दूसरे के पास जा रही है। लोककथा का मूल उद्देश्य लोगों को मनोरंजन के साथ समाज बोध देना यह रहा है। इसमे - पंचतत्र, हितोपदेश, बैताल पंचविशि, शुकससति आदि की कथाएँ प्रचलीत है। जिससे मानव प्राणी के रहन-सहन एवं संस्कारों को बढाने में लोककथा जनसंचार का कार्य करती है।

4) **लोककला :-** लोकनाटय दृश्यश्राव्य माध्यम होने के कारण प्राचीन काल से जनसंचार का सशक्त माध्यम है। भारत के हर प्रांत की अपनी-अपनी लोककलाएँ है। जिसमे-उत्तर प्रदेश की नौटकी, रामलीला, पजाब का भांगडा, महाराष्ट्र की लावणी (तमाशा) गोंधल, राजस्थान की कठपुतली,

आधुनिक माध्यम:-

मानव हमेशा प्रगती की राह पर चलना उचीत समझता रहा है। परिणाम स्वरुप जनसंचार क्षेत्र में मानव ने प्रगती की है और कर रहा है। वर्तमान में कुछ ही पल में संदश यहा से वहा हम भेज सकते है। विश्व घटीत घटना का दृश्य-श्राव्य माध्यम हम दूरदर्शन द्वारा देख सकते है। आधुनिक जनसंचार माध्यम में प्रथम प्रयास डाक माध्यम द्वारा हुआ है। पहले डाक सेवा सिर्फ शासकीय कार्य तक सिमित थी बाद में यह सेवा सामान्य जनता के लिए शुरु हुई।

1) **रेडियों-** रेडियों जनसंचार का सशक्त माध्यम रहा है। इसे आकाशवाणी भी कहा जाता है। क्योंकि समाचारों को आकाश में प्रसारित कर सामान्य जनता तक पहुचाये जाते है। जहा समाचार पत्र नहीं पहुँचता वहा रेडियों द्वारा जनसंचार का कार्य होता है। मनोरंजनात्मक और ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों की वजह से रेडियों निरक्षर और गरिब जनता में लोकप्रिय और प्रभावी माध्यम आज भी है।

2) **दूरदर्शन:-** दूरदर्शन दृश्य श्राव्य माध्यम है। पहले सिर्फ समाचार रेडियों पर सून सकते थे पर दूरदर्शन के आगमनसे लोग घर पर ही विश्व में घटीत होने वाली अच्छी बुरी घटना का सीधा प्रसारण दूरदर्शन तरंगो द्वारा देख और सून सकते है। इसी कारण वह जनसंचार के माध्यम में प्रभावशाली माध्यम बना है।" "अत्वविश्वास तथ सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ दूरदर्शन जबरदस्त धर्मयुध्द छेड सकता है और इसकी क्षमता दूरदर्शन में है। 3) इसी कारण दर्शकों की पहली पसंद दूरदर्शन है। दूरदर्शन पर आज कई चैनल है जो दिनभर लगातार समाचार प्रसारित करते रहते है। जिसमें हर घटना का विस्तृत स्पष्टीकरण भी होता है। इसलिए दूरदर्शन जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है।

3) **विज्ञापन:-** आज कल बाजार में आने वाली हर वस्तु और सेवा को सम्मोहक जानकारी देने का ठोस माध्यम विज्ञापन है। बाजार में अपना अस्तिव जमाने के लिए हर उद्योग समुह विज्ञापन के माध्यम से अपनी वस्तु, सेवा दूसरों के मुकाबले कितनी अच्छी है यह दिखाने का कार्य विज्ञापन द्वारा किया जाता है। विज्ञापन मनुष्य की आशा पुर्ति में सहायक सिध्द हो रहे है। "विज्ञापन का उद्देश्य वस्तु या सेवा के बारे में जानकारी देना, उपभोक्तओं का ध्यान आकर्षित करना उनमें रुचि उत्पन्न करना, मांग बढाना, विक्री बढाना आदि है।" 4) जीससे आदमी वस्तु की और आकर्षित होता है। स्वच्छता, परिवार नियोजन, नशा मुक्ति के विज्ञापनो द्वारा भी जनसंचार का कार्य होता है।

4) **फिल्म:-** फिल्म दृश्य श्राव्य माध्यम है वह भी जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है। यह कलात्मक माध्यम होने के कारण इसमें अभिनय के साथ साथ नाटय संगीत, नृत्य, शिल्प का प्रयोग भी होता है। सिनेमा के निर्देशक, गीतकार अभिनेता गण समाज हित सामने रखकर फिल्म का निर्माण करते है। फिल्म की कथा में सामाजिक समस्या देशप्रेम, रसानियत, दोस्ती ओर संस्कृति होती है। कई फिल्मों में बाल मजदूरी, नारी पीडा, दहेज समस्या, एडस, नशा ऐसे जन जागृति पूरक विषय भी फिल्म में दिखाये जाते है जिससे जनसंचार का कार्य होता है।

5) **कम्प्यूटर:-** वर्तमान युग में जनसंचार के क्षेत्र में सबसे प्रभावी माध्यम कम्प्यूटर है। व्यापार वैज्ञानिक अनुसंधान, अंतरिक्ष पर्यावरण चिकिसा इन क्षेत्र में जो प्रगती हुई है वह कम्प्यूटर द्वारा ही संभव हो सकी है और उसे सफल करने मे इंटरनेट बडा मदतगार साबीत हो रहा है।

www.ignited.in

6) **इंटरनेट:-** कई कम्प्यूटर को जोडने का काम इंटरनेट द्वारा होता है। इंटरनेट की सहायता से इलेक्ट्रॉनिक मेल द्वारा हम विश्व के किसी भी कोने में अपना संदेश कुछ ही पल में भेज सकते है। सारा विश्व इंटरनेट द्वारा एक सुत्र में बांध दिया है। छोटी जानकारी से लेकर बडी जानकारी आज इंटरनेट पर उपलध्द है। वर्तमान इंटरनेट जीवन की जरुरत बन गया है। क्योंकि इंटरनेट का प्रयोग करके सूचनाओं का आदान प्रदान करने के साथ-साथ शिक्षा, सामाजिक, संबंध मनोरंजन चिकित्सा संलग्न जानकारी हमें मिलती है। विदेश में रहने वाले लोग इंटरनेट पर अपने विचारों को व्यक्त कर सकते है साथ ही भारतीय समाचार पत्र भी पढ सकते है। वर्तमान में इंटरनेट जनसंचार का एक सशक्त माध्यम बना है। इसके अलावा पेजर, सेल्यूलर फोन, फॅक्स आदि द्वारा भी जनसंचार का आदान प्रदान बडी सरलता से कर सकते है।

पूराने जमाने में जनसंचार का कार्य धर्म प्रचारक, धर्म गुरु, और लोकगीत के माध्यमसे होता था साथ ही लोककथा और लोककला द्वारा की जनसंचार का कार्य होता रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन के शुरुवाति काल में जनसंचार के परंपरागत माध्यम ही प्रभावी सिध्द हुए है।

आधुनिक माध्यम में समाचार पत्र आजभी जनसंचार में प्रभावी माध्यम है। काल क्रमानुसार इलेक्ट्रोनिक माध्यम में रेडियो ने मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्धक जानकारी पहुचाने का कार्य किया है। दूरदर्शन ने तो घर-घर मे ंजनसंचार के क्षेत्र में अपना स्थान निश्चित किया है। विज्ञापन आजकी जरुरत हो गयी है। इसमें सामाजिक विज्ञापन होते है जैसे दहेजबंदी, बेटी बचाव बेटी पढाओं, परिवार नियोजन, स्वच्छता अभियान ऐसे विज्ञापनों द्वारा भी जनसंचार कार्य होता है। फिल्म तो समाज के हर पहलू को छूति हुई निरंतर अग्रसर होती नजर आति है। समाज की बुराई समाज हित की बात फिल्म द्वारा उजागर होति है। कम्प्यूटर पर इंटरनंट द्वारा हम सारे विश्व की जानकारी का आदान प्रदान कुछ ही पल में कर सकते है। जिसमें ई-मेल, बडी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इंटरनेट वर्तमान में जनसंचार के क्षेत्र में सबसे आगे माना जाता है।

संदर्भ

1) डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत/जनसंचार एवं पत्रकारिता कल और आज/ रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स/प्रथम संस्करण 2013/पृष्ठ -75

2) डॉ. जमादार ए.एच, जानअहेमद के.जे./प्रयोजनमूलक हिंदी तथा भाषा कम्प्यूटिंग/अभिजित पब्लिकेशन/प्रथम संस्करण 2004/पृष्ठ-134

3) डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत/जनसंचार एवं पत्रकारिता कल और आज/ रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स/ प्रथम संस्करण 2013/पृष्ठ -79

4) डॉ. आर. जयचन्द्रन/ हिन्दी विज्ञापनः परख और पहचान/अभय प्रकाशन/प्रथम संस्करण 2012/ पृष्ठ -7

Corresponding Author

Dr. Lavane Vijay Bhaskar*

Research Director, Mahatma Gandhi College, Ahmadpur, Tehshil-Ahmadpur, District-Latur

E-mail – vijaylavane@rediffmail.com